DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo-9415376545

B.A PART-I (HONS) Paper-II
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Lecture No: 29 Date 18/05/2020

डॉ० आम्बेडकर के धार्मिक विचार

Dr. B.R आम्बेडकर को किसी विशेष अर्थ में धार्मिक व्यक्ति नहीं कहा जा सकता। किन्तु वे धर्म को मनुष्य के लिए आवश्यक मानते थे। धर्म इसलिए आवश्यक है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसके पास बौद्धिक क्षमताएँ हैं। B.R Ambedkar के अनुसार धर्म के दो स्रोत हैं- मनुष्य की सामाजिकता और उसकी बौद्धिकता। अगर मनुष्य को समाज की आवश्यकता न होती और उसके पास बुद्धि न होती तो धर्म की कोई अनिवार्यता न होती। जिन प्राणियों में बुद्धि का अभाव है और सामाजिक प्रवृत्ति भी नहीं है उनको धर्म की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए उनके लिए धर्म अनिवार्य भी नहीं है किन्तु मनुष्य धर्म के अभाव में मनुष्योचित व्यवहार नहीं कर सकता। इसलिए धर्म उसके लिए अनिवार्य है। डॉ० आम्बेडकर के शब्दों में " धर्म कोई गहरी आध्यात्मिक आस्था नहीं है, न ही किसी अदृश्य का समस्यात्मक संकेत। यह महज एक मानवोचित आस्था है जो हमारी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।"

इस आधार पर धर्म को नैतिकता से कैसे जोड़ा जाय? आम्बेडकर के विचार से सही सामाजिक व्यवहार ही नैतिक व्यवहार है क्योंकि मनुष्य की बुद्धि इसी व्यवहार की आज्ञा देती है। इसी अर्थ में धर्म का सम्बन्ध राजनीति और अर्थनीति से भी हो जाता है। बिना सही सामाजिक व्यवस्था के न तो राजनीति, न ही अर्थनीति सही मार्ग पर जा सकती है। इसलिए धर्म एक ऐसी आवश्यकता है जो मानव को सही अर्थ में मानव बनाने के लिए तैयार है।

ऐसा प्रतीत होता है कि आम्बेडकर की हिन्दू विरोधी धारणा ही उसी स्रोत से उत्पन्न हुई है जहाँ से उनकी सामाजिक और राजनैतिक धारणाएँ उत्पन्न हुई हैं। दलित वर्ग हमेशा अछूत समझा गया है और युगों-युगों

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376545

B.A PART-I (HONS.) Paper-II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date. 18/05/2020

से तिरस्कृत रखा है। हिन्दू धर्म ने इस सामाजिक अभिशाप का निराकरण नहीं किया है। इसलिए डॉ॰ आम्बेडकर का विचार था कि हिन्दू धर्म वास्तव में अधार्मिक है। चूँकि हिन्दू धर्म समानता के आधार पर नहीं टिका है। हिन्दू धर्म सही अर्थ में धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म में कर्मकाण्ड की प्रधानता है और इसी के माध्यम से वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति हुई है। इसलिए इसका आधार समानता नहीं है और यह अपेक्षित सामाजिकता की स्थापना नहीं कर सकता।

इसीलिए Dr. B.R आम्बेडकर ने अपने जीवन के अन्तिम समय में धर्म परिवर्तन कर ही लिया। उल्लेखनीय है कि उस वक्त के दलित वर्ग के कई नेताओं ने इसका पुरजोर विरोध किया। संभवतः आम्बेडकर का मानना था कि बौद्ध धर्म की नैतिक मान्यताएँ तो वही हैं जो हिन्दू धर्म की है। अन्तर सिर्फ यह है कि उसमें छुआछूत की बात नहीं आई है और मानव मूल्यों पर अधिक जोर दिया गया है। आम्बेडकर के हिन्दू धर्म त्यागने का यह अर्थ कतई नहीं समझना चाहिए कि भारतीय संस्कृति के खिलाफ थे। उन्होंने स्वयं कहा था कि "बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, मैंने इस बात का ख्याल रखा है कि मेरे धर्म परिवर्तन से देश की परम्पराओं संस्कृति और इतिहास पर आघात न हो" हिन्दू धर्म में उन्होंने असमानता जो भाव देखा, उसी से नाराज होकर उन्होंने अपना पैतृक धर्म त्याग किया। दीक्षा लेने के समय उन्होंने कहा "गले-सड़े धर्म को त्यागकर जो असमानता और उत्पीड़न को मान्यता देता है, मैं आज एक नया जन्म ले रहा हूँ और नरक से मुक्ति प्राप्त कर रहा हूँ।" शायद उन्होंने सोचा होगा कि स्वर्ग मिले चाहे न मिले, नरक से मुक्ति आवश्यक है।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner